Rohtas Mahila College, Sasaram, 16-07-20
Dr. Aman Kumar, Dept of Psychology, B.A. Part I(H) PY-I
2019-20

(Topic - प्रत्यक्षीकरण तथा भ्रम में अंतर)

प्रत्यक्षीकरण तथा भ्रम की परिभाषाओं पर ध्यान दें तो इन दोनों के बीच कई समानताएँ हैं जो अग्रलिखित हैं:-

(A) ये दोनों ज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रियाएँ हैं।
(B) इन दोनों में उत्तेजना उपस्थित रहती है।
(C) ये दोनों चयनात्मक प्रक्रियाएँ हैं।
(D) ये दोनों संगठित तथा अर्थपूर्ण मानसिक प्रक्रियाएँ हैं।
(E) इन दोनों में उत्तेजना की विशेषता तथा अनुभव की विशेषता के बीच अंतर देखा जाता है। दोनों प्रक्रियाओं के बीच इतनी समानता होने पर भी निम्नलिखित अंतर हैं।

(i) प्रत्यक्षीकरण में किसी उत्तेजना का सही ज्ञान होता है, परन्तु भ्रम में किसी उत्तेजना का गलत ज्ञान होता है।

(ii) प्रत्यक्षीकरण सच्चाई होता है जबकि कुछ भ्रम झूठ होता है। किसी उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण हमेशा कायम रहता है। जैसे- पुस्तक को हम हमेशा पुस्तक के रूप में ही प्रत्यक्षीकरण करते हैं। लेकिन अधिक भ्रम ऐसे हैं जो थोड़ी देर बाद समाप्त हो जाते हैं। हम अंधेरे में रस्सी को साँप समझ बैठते हैं, परन्तु हमारा यह भ्रम रोशनी होते ही समाप्त हो जाता है। इसी तरह हम किसी अपरिचित व्यक्ति को अपना मित्र समझकर पुकार बैठते हैं, परन्तु उस व्यक्ति के मुड़ते ही हमारा यह भ्रम दूर हो जाता है।

(iii) किसी उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण प्रायः सभी व्यक्तियों में एक ही रूप में होता है। जैसे- सभी व्यक्तियों को पुस्तक का प्रत्यक्षीकरण पुस्तक के रूप में तथा फूल का प्रत्यक्षीकरण फूल के रूप में ही होता है। दूसरी ओर सभी व्यक्तियों में किसी उत्तेजना से एक ही तरह का भ्रम उत्पन्न हो यह आवश्यक नहीं। जैसे- अंधेरे में सुनसान स्थान पर सड़क के किनारे टूटे पड़े को कोई भूत समझ सकता है, कोई चोर समझ सकता है और कोई उसे जानवर समझ सकता है।

(iv) प्रत्यक्षीकरण पर अभ्यास का कोई स्पष्ट प्रभाव नहीं पड़ता है। जैसे- हम किसी पुस्तक को एक बार देखें या पचास बार देखें, उसके प्रत्यक्षीकरण में कोई अन्तर नहीं होगा। दूसरी ओर भ्रम पर अभ्यास का प्रभाव पड़ता है। मूलर लायर भ्रम पर प्रयोग

Scanned with CamScanner

का के हम देख सकते हैं कि अभ्यास के कारण भ्रम की मात्रा घटती है।

(v) किसी वस्तु की प्रत्यक्षीकरण पर थकान का कोई स्पष्ट असर नहीं पड़ता है। जैसे:- किसी फूल को थकान की अवस्था में देखें अथवा ताजा अवस्था में देखें, फूल के प्रत्यक्षीकरण में कोई अंतर नहीं होगा। दूसरी ओर भ्रम पर थकान का स्पष्ट प्रभाव देखा जाता है। मूलर लायर भ्रम पर किये गये प्रयोग से प्रमाणित होता है कि थकान के कारण भ्रम की मात्रा बढ़ती है।

भ्रम तथा प्रत्यक्षीकरण में इन अंतरों को आधुनिक मनोवैज्ञानिक केवल इतना ही अन्तर मानते हैं।

Scanned with CamScanner